Journal of Social Review and Development, 2024; Special 1:65-67 ISSN NO: 2583-2816

Special Issue
"(Global Partnership: India's Collaboration Initiatives for Economic and Social Growth)"

महिलाओं के सशक्तिकरण में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का योगदान

डॉ0 वंदना शर्मा[1] और मनोज कुमार श्रीवास्तव[2]
[1] राजनीति विज्ञान विभाग, बरेली कालेज, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, एम0 जे0 पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत
Correspondence Author: डॉ0 वंदना शर्मा

सारांश
भारत में महिला सशक्तिकरण के लिये राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ तथा उसके आनुषांगिक संगठनों द्वारा अनेक प्रकल्प तथा गतिविधियाँ सतत् रूप से चलायी जा रही हैं। हालाँकि संघ के खिलाफ समाज में एक भ्रांति फैलायी गयी कि संघ महिला विरोधी है, परन्तु वास्तविकता इससे एक दम से भिन्न है। संघ ने अपनी स्थापना के समय से ही महिला सशक्तिकरण हेतु काफी प्रयास किया है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ स्त्रीवाद की यूरोपीय अवधारणा का विरोध करता है जिसमें स्त्री और पुरुष को एक दूसरे के प्रतिद्वन्दी के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है, जबकि संघ और उसके आनुषांगिक संगठन भारत की सांस्कृतिक विरासत एवं हिन्दुत्व की महान परम्पराओं को संयोजित करते हुये स्त्री और पुरूष को एक दूसरे के प्रतिद्वन्दी नहीं बल्कि पूरक के रूप में देखते हैं।

मूलशब्द: राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ, आनुषांगिक संगठन, राष्ट्र सेविका समिति, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, महिला सशक्तिकरण, स्त्रीवाद, महिलाओं का प्रतिनिधित्व आदि।

परिचय

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर यह आरोप लगता है कि संघ पुरूष प्रधान संगठन है और संघ की शाखाओं में महिलाओं का प्रवेश वर्जित है। परन्तु जब हम संघ के विचारों पर गहराई से अध्ययन करते हैं तो यह पाते हैं कि संघ सदैव महिलाओं के सशक्तिकरण का पक्षधर रहा है। संघ मानता है कि महिला सशक्तिकरण के लिये एक व्यापक सोच की आवश्यकता है। इसमें सभी जातियाँ, संप्रदायों , भाषाओं, क्षेत्रों, विभिन्न आर्थिक स्थितियाँ तथा शैक्षिक पृष्ठभूमि की महिलाओं के विषय में सोचना पड़ेगा। केवल यह कहने मात्र से काम नहीं बनेगा। कि सब समान हैं। यह समानता दिखनी भी चाहिए और व्यवहार में भी उतरनी चाहिऐ। संघ की पद्धति इसी प्रकार की है।'' यहाँ संघ प्रमुख मोहन भागवत का 11 नवम्बर 2016 को राष्ट्र सविका समिति के कार्यकर्ता प्रेरणा शिविर में किया गया उद्गार उल्लेखनीय हैं – ''एक बात पर सबकी सहमति है कि भारत को परम वैभव सम्पन्न बनाना है तो भारत की मातृशक्ति (महिलाओं की शक्ति) का जागरण सशक्तिकरण और पुरूषों के बराबर समाज में उनका योगदान हो ऐसी स्थिति उत्पन्न करना पहली आवश्यकता है। इस बात से सभी सहमत हैं कि अगर ऐसा सशक्तिकरण होता है और मातृशक्ति को उनकी वास्तविकता भूमिका में खड़ा करना है तो अपने देश को सनातन मूल्यों के आधार पर ही करना पड़ेगा। क्योंकि इन सब विषयों में बाकी दुनियाँ का जो अनुभव है वह हमारी तुलना में बहुत थोड़ा है।''

जब भारतीय संदर्भ में स्त्रियों की स्थिति को आयातित स्त्रीवाद के माध्यम से समझाने का प्रयास किया जाता है। तो यह बुरी तरह विफल हो गया, हालॉकि इसके माध्यम से कुछ विचारणीय प्रश्न उठाये गये, जिनके आलोक में कुछ ऐसे कानून भी बने, जिन से महिलाओं को मदद मिल सकी, किन्तु उसकी मुख्य न्यूनता इसका गलत दृष्टिकोण तथा भारतीय मातृत्व की श्रेष्ठ अवधारणा को महत्वहीन बताया जाना था। उन्होंने महिला सशक्तिकरण को 'यौन राजनीति' तथा संबंधों को मात्र अधिकारों तक सीमित काने की सोच के आलोक में परिभाषित करने का प्रयास किया।

संघ के अनुसार भारत में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा पश्चिमी स्त्रीवादी विचार से नितांत भिन्न है। संघ का मानना है कि भारतीय मार्ग एकात्मता का है जहाँ पर स्त्री और पुरूष साथ मिल कर उन सभी सामाजिक कुरितियों एवं बुराईयों के निवारण की कोशिश करते हैं, जो महिलाओं के विकास मार्ग में अवरोध है और उसे बाधित करते हैं । भारत में परदा प्रथा विदेशी आक्रमणों के प्रभाव के कारण आयी जिसे दूर किया जाना चाहिए। महिलाओं में शिक्षा का स्तर बढ़कर उन्हें आर्थिक रूप से स्वावलंवी और सशक्त बनाना सम्पूर्ण समाज की जिम्मेदारी है। महिलाओं के लिये बनाये जाने वाले कानून एवं उनके सशक्तिकरण की नीतियों का राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ खुलकर समर्थन करता है परन्तु उसका मानना है कि इसके लिये समाज की मानसिकता में परिवर्तन लाना अनिवार्य है जिससे समाज तथा प्रत्येक परिवार में स्त्रियों की स्थिति में गुणात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। इस सब को ध्यान में रखते हुये राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ ने स्त्रियों के लिये शिक्षा, लोकतांत्रिक सहभागिता, स्त्री सशक्तिकरण तथा महिलाओं के प्रति हिंसा, दहेज प्रथा आदि जैसी समस्याओं को दूर करने हेतु समाज को जागृत करने के लिये परिवारों से संपर्क कर उन्हें जागरूक बनाने तथा महिलाओं एवं बालिकाओं के प्रति संवेदनशील बनाने के लिये कार्य कर रहा है।

राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ ने अपने प्रारम्भिक काल में ही यह अनुभव कर लिया था कि महिलाओं के बीच जागरूकता का प्रसार किये बिना समाज को मजबूत एवं सशक्त नहीं बनाया जा सकता। राष्ट्र सेविका समिति की संस्थापिका श्रीमती लक्ष्मीबाई केलकर ने कई

अवसरों पर कहा– 'महिला परिवार और राष्ट्र के लिये प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करती हैं, जब तक इस शक्ति को जागृत नहीं किया जाता, समाज प्रगति नहीं कर सकता।'

संघ की स्थापना के लगभग एक दशक बाद केवल महिलाओं के लिये उसी के जैसा एक संगठन स्थापित किया गया जिसका नाम था 'राष्ट्र सेविका समिति। इसकी संस्थापिक श्रीमती लक्ष्मीबाई केलकर थी जो मात्र 27 वर्ष की आयु में विधवा हो गयी थी उन्होने पूरा जीवन इस संगठन के माध्यम से महिलाओं के उत्थान में समर्पित कर दिया। राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना और उसके मार्ग दर्शन में संघ के संस्थापक डॉ0 हेडगेवार की महत्वपूर्ण भूमिका थी। वर्तमान में सेविका समिति का प्रसार संघ की अपेक्षाओं के अनुरूप पूरे भारत में हैं। जिस प्रकार संघ में प्रचारक होते हैं। उसी प्रकार समिति में प्रचारिकायें होती हैं। समिति की कार्य पद्धति एवं लक्ष्य संघ के समान ही है। सेविका समिति का कार्य बहुत व्यापक है और कोई भी इसकी अनदेखी नहीं कर सकता। देश के लगभग प्रत्येक भाग में इसका व्यापक विस्तार है। प्रत्येक प्रांत में प्रचारिकायें हैं तथा पूरे भारत वर्ष में सेविका समिति की 4900 शाखायें हैं। सेविका समिति 15 शैक्षणिक परियोजनायें तथा 385 सेवा प्रकल्प चला रही हैं। वैश्विक स्तर पर संसार के बाइस देशों में सेविका समिति का कार्य चलता है।

संघ की प्रेरणा से महिलाओं की कई संस्थाओं का निर्माण किया गया है यथा–पूणे की भारतीय स्त्री शक्ति जागरण तथा नागपुर की मत्रैयी थी। आगे चलकर इन दोनों को मिलाकर एक सार्वजनिक मंच के रूप में अखिल भारतीय महिला संगठन का निर्माण किया गया जिसका नाम 'स्त्रीशक्ति' रखा गया। इसकी कई शाखायें भी हैं जो विभिन्न गतिविधियों के लिये प्रतिबद्ध है।

राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के आनुषांगिक संगठनों में कार्यरत महिलाओं के लिऐ पिछले 25–30 वर्षो से विशेष ध्यान दिया जा रहा है। संघ के आनुषांगिक संगठनों के बीच महिलाओं के पारस्परिक समन्वय तथा उनमें नेतृत्व कौशल विकसित करने का प्रबल समर्थक रहा है। महिला समन्वय की व्यवस्था देखने के लिये गीताताई को महिला समन्वय का अखिल भारतीय प्रमुख नियुक्त किया गया। उनका प्रमुख कार्य संघ के आनुषांगिक संगठनों में महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने की दृष्टि से उनमें क्रिया विधि संबंधी क्षमता को सुनिश्चत करना था। महिला समन्वय में गीता ताई के साथ महिला कार्यकर्ताओं की एक पूरी टीम सक्रिय रूप में काम करती है। इनमें से उल्लेखनीय हैं, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की ममता यादव, भारतीय मजदूर संघ की गीता गोखले, विश्व हिन्दु परिषद से श्रीमती मीनाक्षी तथा बनवासी कल्याण आश्रम से रंजना खरे। 1990 से जब नागपुर में महिला समन्वय का कार्य प्रारंभ किया गया और 1993 में इसका अखिल भारतीय प्रसार हो गया, उस समय से गीता ताई ही इसका नेतृत्व कर रही है।

पूणे स्थित शोध आधारित 'दृष्टि' नामक एक महिला अध्ययन संगठन को भी संघ द्वारा महिलाओं की ओर से प्रारंभ परियोजनाओं की सहायता के लिये वर्ष 2000 में प्रारंभ किया गया। वर्तमान में इसकी प्रमुख अंजलि देश पांडे हैं।

महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु प्रयास राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के बहुत से आनुषांगिक संगठनों में देखा जा सकता है। अधिवक्ताओं का संगठन अधिवक्ता परिषद महिलाओं के सांविधिक अधिकारों के प्रसार के लिये प्रांत तथा राष्ट्रीय स्तरों पर सम्मेलन आयोजित करता है। इसमें पुरूष तथा महिलाएं दोनो भाग लेते हैं। क्रीड़ा भारती महिला एथलीट्स व खिलाड़ियों हेतु सुविधाओं के निर्माण के लिये अभियान चलाने की दिशा में अपना ध्यान केन्द्रित किया है। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, भारतीय स्त्रियों के इतिहास को प्रस्तुत करने का कार्य कर रही है तथा महिला इतिहासकारों के सम्मेलन आयोजित करती है। 2017 में भारतीय मजदूर संघ ने दिल्ली में एक व्यापक मार्च आयोजित किया जिसमें लगभग दो लाख लोगों ने भाग लिया। इनमें से एक लाख के लगभग महिलायें थीं। विज्ञान भारती ने महिला वैज्ञानिकों का एक सम्मेलन 'शक्ति' प्रारम्भ किया है। बनवासी कल्याण आश्रम तथा संस्कार भारती में तो कई महिला पूर्णकालिक भी है।

अखिल भारतीय विधार्थी परिषद द्वारा राष्ट्र और समाज हित के लिये चलाये जाने वाले आन्दोलनों में बड़ी संख्या में युवतियों की सहभागिता रहती है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के माध्यम से कई छात्रायें सक्रिय कार्यकर्ता बनी तथा उन्होंने प्रदेश मंत्री राष्ट्रीय मंत्री जैसी प्रदेश व राष्ट्रीय स्तरीय सचिवों की जिम्मेदारियों का भी निर्वहन किया। इसके प्रमुख उदाहरण भी है, गीताताई गंडे विधार्थी जीवन में एबीवीपी की कार्यकार्ता थी बाद में ग्लैक्सो कंपनी से त्यागपत्र देकर विद्यार्थी परिषद की पूर्ण कालिक सदस्य बन गई। आपात काल विरोधी आन्दोलन में भी उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया तथा मानवाधिकार एंव महिलाओं के अधिकारों के लिये काम करने वाले अनेक संगठनों के साथ काम किया। 75 वर्ष की आयु में भी गीताताई विभिन्न राज्यों में प्रवास पर रहते हुये छात्राओं के व्याक्तित्व का विकास करती हैं, उनसे बातचीत कर रहीं हैं तथा उनमें नेतृत्व के गुण विकसित करने के दिशा में कार्य कर रही हैं। संघ में भी उनका एक सम्मानित स्थान है।

तमिलनाडु में सुमित वेंकटेश जो कि एक कॉटन मिल तथा अन्य संम्बद्ध इकाइयॉ चलाती है, ने कौशल विकास के क्षेत्र में कई वर्षो तक काम किया है। सुमथीश्री निवास तमिलनाडु की एक सशक्त भाजपा नेता के रूप में व्यापक रूप से पहचानी जाती हैं। आशा लकड़ा गुमला के एक जनजाति परिवार से आने वाली पहली पीढ़ी की शिक्षित महिला हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का व्याक्तित्व विकास कार्य इतना प्रभावशाली रहा कि वे एक कुशलवक्ता बनीं तथा आगे चलकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रीय मंत्री भी बनीं।

नागपुर में मीरा कडवे अपराधिक से लेकर पारिवारिक मामलों में उलझी महिलाओं का न्यायिक मार्गदर्शन करती हैं। इस कार्य के कारण इन्हें कई बार पुलिस थानों में भी जाना पड़ता हैं। स्मिता कोल्हे अपना क्लीनिक चलाने वाली एक आयुर्वेदिक डॉक्टर थीं। उन्होंने लम्बे समय तक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में भी काम किया। रवि कोल्हे से विवाह के बाद उन्होंने अपना क्लीनिक बंद कर महाराष्ट्र के अमराबती जिले में मेलघाट के वन क्षेत्र में जनजातिय लोगों के लिये कार्य प्रारंभ किया और उनकी इस सेवा के लिये इस दंपती को वर्ष 2019 में 'पदम श्री' से सम्मानित किया गया।

संघ पर महिला विरोधी होने का आरोप वही लोग लगाते है जो संघ को नहीं जानते हैं। राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ कोई महिला विरोधी संगठन नहीं है और वह सिर्फ इसलिए कि महिलायें संघ की शाखाओं में नहीं जाती है। यह आरोप भी गलत है कि महिलाओं संघ में बिल्कुल नहीं है और उन्हें संघ के कार्यो में भाग लेने की अनुमित नहीं है। जबकि वास्तविकता इससे अलग है अन्य सभी राजनीतिक और सामाजिक संगठनों की तुलना में संघ के आनुषांगिक संगठनों में महिलाओं की संख्या कहीं कम नही बल्कि आधिक ही होगी। संघ के वरिष्ठ पदाधिकारी प्रहलाद राव अभयंकर कहते है– ''शाखा में महिला सदस्य नहीं होती है, संघ में हैं। हमारे लिये ध्यान देने योग्य बात है कि कम्यूनिष्ट पार्टी जैसे स्वयंभू और तथा कथित सबसे प्रगतिशील संगठन की तुलना में संघ संबधित सगठनों में बहुत पहले से महिलायें शीर्षस्थ पदों पर आसीन रही हैं। सी पी एम के पोलित ब्यूरो को इसकी प्रथम महिला सदस्य श्रीमती वृंदाकरात इसकी स्थापना के दशकों बाद प्राप्त हुयी । यह महिला पार्टी के महासचिव की धर्म पत्नी हैं। मैने इस विचित्र विरोधाभास का उल्लेख किसी का उपहास उड़ाने के लिये नहीं किया अपितु इस तथ्य को रेखांकित करने के लिये किया कि राष्ट्र के सामाजिक और राजनैतिक जीवन में महिलाओं को विलंब से मिली शुरूआत के कारण यह एक

सामाजिक सच्चाई है।

संघ विचारक देवेन्द्र स्वरूप के अनुसार– ''संघ में महिलाओं के साथ काम करने या प्रवेश को लेकर शुरू से ही हिचक रही। हालांकि 1936 में ही राष्ट्र सेविका समिति का गठन हो गया था, लेकिन संघ में ज्यादातर लोगों को लगता था कि नारी–पुरूष संबंधों को लेकर गड़बड़ हो सकती है। अगर साथ–साथ काम किये तो परिणाम सुखद नहीं होगें।'' वस्तुतः राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ महिला सशक्तिकरण के लिये तो तत्पर है वह महिलाओं का प्रतिनिधित्व भी बढ़ाना चाहता है परन्तु इसके लिये सीधे संघ में महिलाओं के प्रवेश से बचता रहा है। अन्य आनुषांगिक संगठनों के माध्यम से महिलाओं का प्रतिनिधित्व संघ बढ़ा रहा है।

संघम् शरणम् गच्छामि के लेखक विजय त्रिवेदी के अनुसार ''राष्ट्र सेविका समिति में एक अरसे तक रही, एक महिला वरिष्ठ सदस्य ने मुझसे कहा कि संघ में महिलाओं की स्थिति ठीक हिन्दू परिवारों जैसी है, जिसे कहा तो लक्ष्मी जाता है लेकिन खाना वह घर में सबसे बाद में खाती है। उस की राय या इच्छा निर्णायक नहीं मानी जाती। यह बदलाव जब तक संघ में नहीं होगा, हिस्सेदारी की संख्या बताने से काम नहीं चलेगा। उनका मानना है कि आमतौर पर संघ को महिला विरोधी न भी कहें लेकिन महिला निर्णायक भूमिका में नहीं होती। संघ के 100 साल पूरे होने तक यह हालत बदले तो संघ की तस्वीर और इमेज दोनों बदल जायेगी।''

निष्कर्ष

हालांकि राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ में महिलाओं का प्रतिनिधित्व सीमित है जिसका प्रमुख कारण संघ की शाखाओं में महिलाओं को प्रवेश नहीं दिया जाना है परन्तु राष्ट्र सेविका समिति के माध्यम से समाज, राजनीति और प्रशासन में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाने का प्रयास जारी है। ऐसा नहीं कि संघ में महिलाये नहीं है, आज महिलाये संघ के बहुत से विभागों जैसे सेवा विभाग, संपर्क विभाग और प्रचार विभाग में काम कर रही हैं। संघ के सम्बद्ध संगठनों में महिलाओं की भागीदारी भरपूर है तथा पिछले कुछ वर्षो से उनकी ओर विशेष ध्यान भी दिया जा रहा है। संघ के राष्ट्रीय संपर्क प्रमुख अनिरूद्ध देशपाण्डे कहते हैं कि ''कोई भी बदलाव एक दिन में नहीं होता। महिलाओं को लेकर भी थी धीरे–धीरे बदलाव होगा। इवोल्यूशन हो रहा है। इवॉल्ट होने में थोड़ा समय लगता है।''

संदर्भ

1. आंबेकर सुनील, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ : स्वार्णिम भारत के दिशा सूत्र, प्रभात पेपर बैक्स, नई दिल्ली, 2021, पृ0सं0–232।
2. भागवत मोहन, यशस्वी भारत प्रभात, पेपर बैक्स नई दिल्ली, 2021, पृ0सं0–118।
3. के0 मिलंट, सेवसुअल पॉलिटिक्स, थ्योरी ऑफ सक्सुअल पालिटिक्स (तृतीय संस्करण) यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनॉइस प्रेस शिकागो, 2000, पृ0सं0–26।
4. आर्गनाइजर, 26 अक्टूबर 2018
5. rastrasevipasamiti.org
6. आंबेकर सुनील, राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ : स्वार्णिम भारत के दिशा सूत्र प्रभात पेपर बैक्स, नई दिल्ली 2021, पृ0सं0–221।
7. वही, पृ0सं0–225।
8. शारदा रतन, आर. एस. एस 360° व्लूम्सबरी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2020, पृ0सं0–201।
9. त्रिवेदी विजय, संघम शरणम् गच्छामि इका वेस्टलैंड पब्लिकेशन चेन्नई, 2020, पृ0सं0–67।
10. वही, पृ0सं0–66।
11. वही, पृ0सं0–67।